व्यापारिक अन्नोत्पादक कृषि (Commercial Grain Farming Agriculture) :- व्यापार के उद्देश्य से अन्न उत्पादन की जानेवाली कृषि को व्यापारिक अन्नोत्पादक कृषि कहा जाता है। शीतोष्ण घास प्रदेश में इस प्रकार की कृषि की जाती है।

8.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

1. विश्व के शीतोष्ण घास प्रदेश में मानवीय अभिक्रिया का वर्णन करें।
2. शीतोष्ण घास प्रदेश में भौतिक स्वरूप, आर्थिक क्रियाकलाप एवं मानवीय गतिविधियों का वर्णन करें।

8.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. बी० एन० सिंह : मानव भूगोल
2. माजिद हुसैन : मानव भूगोल
3. डा० श्रीवास्तव एवं राव - मानव भूगोल
4. L.R. Singh : Fundamentals of Human Geography
5. Kaox : Human Geography : Places and Regions in global context.

●●●

ग्रामीण अधिवासों का उद्भव
(Evolution of Rural Settlemant)

पाठ-संरचना (Lesson-Structure)

1.0 उद्देश्य (Objection)

1.1 परिचय (Introduction)

1.2 ग्रामीण बस्तियों का उद्भव (Evolution of Rural Settlement)

1.2.1 शिकार तथा भोजन संग्रह की अवस्था

1.2.2 चारागाह या पशुचारण की अवस्था

1.2.3 कृषि विकास की अवस्था

1.3 नगरीय अधिवास का उद्भव (Evolution of Urban Settlement)

1.4 नगरों की उत्पत्ति एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Origin and Evolution of Towns)

1.5 सारांश (Summing up)

1.6 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1.0 उद्देश्य (Objective)

इस अध्याय का उद्देश्य है विद्यार्थियों को ग्रामीण एवं नगरीय अधिवासों के उदभव (Evolution) के बारे में जानकारी देना ताकि विद्यार्थी जान सकें कि आज का जो ग्रामीण या नगरीय अधिवास (Settlement) है वह किन-किन अवस्थाओं से गुजर कर यहाँ तक पहुँचा है।

1.1 परिचय (Introduction)

आवास मनुष्य की मूलभूत आवश्कताओं में से एक है। यह एक झोपड़ी एक मकान, एक फ्लैट अथवा एक बड़ी हवेली हो सकता है। 'बस्ती' (Settlement) मनुष्यों के आवासों के उस संगठित निवास स्थान को कहते हैं, जिसमें उनके रहने अथवा प्रयोग करने वाले भवनों तथा उनके आने-जाने के लिए बनाए गये रास्तों एवं गलियों को सम्मिलित किया जाता है। इनमें आखेटकों एवं चरवाहों के अस्थाई डेरे, स्थाई बस्ती जिसे गाँव कहते हैं तथा एक वृहत नगरीय समूह को सम्मिलित किया जाता है। मानव बस्तियाँ कुछ घरों वाले एक छोटे पुरवे से लेकर बहुत से भवनों वाले नगर या मेगालोपोलिस हो सकते हैं, जिसमें लाखों लोग रहते हैं।

बस्तियों/ अधिवासों को सामान्यत: उनके आकार तथा प्रकार्यो के आधार पर ग्रामीण (Rural) तथा नगरीय (Urban) अथवा गाँवों तथा नगरों, दो प्रकारों में बाँटते हैं।

ग्रामीण बस्तियाँ मुख्यत: प्राथमिक कार्यो, जैसे-कृषि, मत्स्यन, खनन, वनिकी आदि से सम्बन्धित होती हैं।

हडसन (Hudson) महोदय के अनुसार- "ग्रामीण अधिवास से आशय उस अधिवास से है जिसके निवासी अपने जीवनयापन के लिए भूमि के विदोहन पर निर्भर करते हैं। अधिकांश ग्रामीण अधिवासों के अधिकांश निवास कृषि-कार्यों में संलग्न रहते हैं।" " Rural Settlement is one whose inhabitants depend for their livelihood upon the exploitation of the soil, in most villages a majority of inhabitants are occupied in farming."

परपिल्लो (Perpillou) महोदय के अनुसार "एक ग्रामीण अधिवास वास्तव में मुख्यतया एक कृषि कार्यशाला होती है। ग्रामीण अधिवास को उस भूमि से अलग नहीं किया जा सकता है जिसका प्रयोग वहाँ के निवासी करते हैं। इन अधिवासों की आकृति तथा व्यवस्था प्राय: मुख्य रूप से कार्य के प्रकार, कृषि तकनीकों तथा उन विधियों के अनुरूप होते हैं जिन विधियों से भूमि का प्रयोग किया जाता है।" ("A Rural Settlement is in fact mainly an agricuttural workshop and it cannot be separated from the land whose use it ensures its shape and arrangement are often in strict accord with the kind of work, the agricuttural techniques and the way that the soil is used.")

अत: यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण अधिवास में वे समस्त अधिास सम्मिलित हैं जिनकी अधिकांश जनसंख्या मूलत: प्राथमिक व्यवस्थायों (Primary Occupations) में संलग्न रहती है। दूसरी ओर, नगरीय बस्तियों (Urban Settlements) में केन्द्रीयता (Nodal) का गुण होता है तथा उनमें द्वितीयक (Secondary Activities) एवं तृतीयक (Tertiary Activities) की प्रधानता होती है।

'नगर' शब्द अंग्रजी के शब्द 'City' का हिन्दी रूपान्तरण है, लेकिन नगर शब्द का प्रयोग City या शहर के लिए न होकर अधिक विस्तृत है। वास्तव में नगर के स्थान पर उसके कुछ सामानार्थी शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है इनमें कस्बा (Town), नगरीय बस्ती (Urban Settlement) नगरीय केन्द्र तथा नगरीय स्थान (Urban Place) सर्वाधिक प्रचलित शब्द हैं। जर्मनी में नगर के लिए स्टॉट (Stadt) तथा फ्रेंच में सीटी (City) शब्द का प्रयोग किया जाता है।

नगर की परिभाषा विश्व के विभिन्न देशों में आज भी एक नहीं है, दूसरे विभिन्न देशों की सभ्यता एवं सामाजिक दशाओं के परिवर्त्तन के साथ-साथ नगर के मापदण्ड भी बदलते रहे हैं। इस संदर्भ में आर० ई० कडकिन्सन महोदय अपनी पुस्तक 'City and Region' में लिखते हैं, "इस प्रकार के अधिवास अपने चरित्र एवं स्तर में एक स्थान से दूसरे स्थान, एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र, एक संस्कृति प्रदेश से दूसरे संस्कृति प्रदेश तथा सांस्कृतिक विकास के विभिन्न समयों या कालों के साथ-साथ बदलते रहते हैं।" (Such settlement vary in character and status from one place to another, from one area to another, and from one cuttural realm to another, as well as at defferent periods of cuttural development)

विस्तृत रूप से एक नगरीय अधिवास या नगर एक ऐसा स्थायी होता है जहाँ ऐसे विशेषीकृत कार्यो का जमघट या समूहन मिलता है जो एक सुसंस्कृति या सभ्य समाज की सेवाओं के लिए आवश्यक होती हैं। इस प्रकार के विशेषीकृत कार्य नगर के विभिन्न भागों में प्राय: अलग-अलग सम्पन्न होते हैं। नगर की यह अवधारणा यूरोप में नगरीय जीवन की प्रारम्भिक अवस्था से आज तक लगभग एक सी रही है। डिकिन्सन (R.E.

Dickinson) महोदय लिखते हैं- "नगरीय शब्द 'ग्रामीण' शब्द के विपरीत उन क्रियाओं के लिए लागू है जो मिट्टी को जोतने सम्बन्धी क्रियाओं से अलग हैं तथा नगर की क्रियाएँ निश्चित स्थानों पर परस्पर सम्बन्धित क्रियाएँ घनिष्ठ साहचर्य में सम्पन्न होती है।" (" The word 'urban' as opposed to 'rural' implies an activity that is divorced from the cultuvation of the soil and that is carried out in close association with kindred activities at fixed places.").

विडाल-डी-ला-ब्लाश महोदय के अनुसार "नगर सामाजिक संगठन वाला एक अधिक व्यापक क्षेत्र होता है। यह सभ्यता के उस स्तर पर प्रतिनिधित्व करता है जिसे कुछ ही अधिवास प्राप्त कर पाते हैं। ("A City is a social organization of much greater Scope, it is the expression of a state of civilization which certain localities have not achieved and which they may perhaps never of themselves attain,").

वॉन रिचथोफेन (Von Richthofen) लिखते है- "नगर एक संगठित समूह रखता है जिसमें सामान्यतया कृषि कार्यो के विपरित प्रमुख व्यवसाय वाणिज्य तथा उद्योग से सम्बन्धित होते हैं।" ("The town consisrs of an organised group in which normally the main occupations are concerned with commerce and industry as opposed to agriculture pursuits.").

वर्त्तमान समय में विश्व के विभिन्न देशों में एक बस्ती को नगर (City) Or urban Settlement की परिभाषा के अन्तर्गत सम्मिलित किए जाने के लिए जनसंख्या-आकार (Population Size) को महत्वपूर्ण आधार माना है। तब भी ग्रामीण बस्ती से नगरीय बस्ती को पृथक करने के लिए जनसंख्या-आकार के निर्धारण में बहुत अन्तर पाया जाता है। निम्न जनसंख्या घनत्व वाले देशों में सघन जनसंख्या वाले देशों की तुलना में 'विभाजन की संख्या' कम हो सकती है। उदाहरण के लिए डेनमार्क, स्वीडेन तथा फिनलैंड में कोई स्थान जिसकी जनसंख्या 250 से अधिक है, नगर कहलाता है। आइसलैण्ड में यह संख्या 300 है, जबकि कनाडा एवं वेनेजुएला में नगरीय बस्तियों की जनसंख्या 1,000 होनी चाहिए। कोलंबिया में 1,500, अर्जेन्टाइना तथा पुर्त्तगाल में 2,000, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा थाइलैण्ड में 2,500, भारत में 5,000 तथा जापान में 30,000 निवासियों की बस्तियाँ नगर कहलाने के योग्य मानी जाती हैं। भारत में जनसंख्या-आकार के अतिरिक्त जनसंख्या का घनत्व भी एक मापदण्ड है जिसके अनुसार एक नगर की जनसंख्या का घनत्व लगभग 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर होनी चाहिए तथा वहाँ कोई स्थानीय प्रशासन हो।

1.2 ग्रामीण अधिवासों का उद्विकास (Evolution of Rural Settlement)

अधिवासों का या स्थाई मानवीय आवासीश जीवन का आरम्भ किस प्रकार हुआ, यह सुनिश्चित नहीं है। यह घटना परदे में ढँकी हुई है, क्योंकि इनका आरम्भ लिखित इतिहास से पूर्व हो चुका था। कहाँ और क्यों स्थायी अधिवास आरम्भ हुए, इस सम्बन्ध में केवल कुछ तर्कसंगत अनुमान अवश्य हैं।

पौधों को अनुकुल बनाये जाने और अधिवासों की स्थापना से पूर्व मानव जाति खानाबदोश जीवन व्यतीत करती थी और जल की खोज में घूमते रहते थे। बेरों और कन्दमूल को एकत्र कर अथवा जंगली पशुओं को मार/शिकार कर भोजन प्राप्त किया जाता था।

इतिहासकारों और सांस्कृतिक-मानवशास्त्रियों द्वारा मानव अधिवासों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक स्पष्टीकरण प्रस्तुत किये गये हैं। भूगोलवेत्ता माजिद हुसैन ने अपनी पुस्तक 'मानव भूगोल' में मानव अधिवासों की स्थापना में धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक कारण को मुख्य माना है। निम्न पंक्तियों में इन कारणों का, संक्षेप में वर्णन दिया जा रहा है:-

धार्मिक कारक (Religious Factor) :

प्रथम, स्थायी अधिवास, धार्मिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, विशेषकर मृत व्यक्तियों को गाढ़ने के स्थान के रूप में काम में आते होंगे। आखिरकार, एक क्रब से अधिक स्थायी और क्या हो सकता है। इन खानाबदोश जातियों के मृत व्यक्तियों को आदर देने के लिए धार्मिक कृत्य, सम्भवत: मृत्यु के वार्षिकोत्सव जैसे अवसरों पर प्रार्थना सभाएँ होती होंगी। मृत व्यक्त्यिों के लिए स्थायी विश्राम स्थल स्थापित किये जाने के उपरांत जाति के लोग उस स्थान पर उचित धार्मिक क्रियाओं को करने के लिए पुजारी की नियुक्ति करते होगें। बाद में यह पूजा-स्थल (मंदिर) आकर्षण के केन्द्र बन गये होंगे और इस प्रकार ये स्थल अधिवासों की स्थापना में सहायक रहे होंगे।

सांस्कृतिक कारक (Cuttural Factor) :

स्त्रियों और बच्चो को सुरक्षा देने के लिए भी अधिवास काम में लिए जाते रहे होंगे, जिससे कि पुरूषों को भोजन की खोज में दूर तक घूम सकने का अवसर प्राप्त हो सके। पुरूषों द्वारा एकत्र सामग्री से स्त्रियाँ घर के उपयोग में आने वाली वस्तुएँ, जैसे बर्त्तन (हाण्डियाँ), टोकरी, वस्त्र तथा अन्य घर की उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करती थी।

राजनैतिक/सैन्य कारक (Political/Military Factor) :

अन्य जनजातियों के लोगों के आक्रमण के कारण पुजारी, शिक्षक, स्त्रियाँ और बच्चे असुरक्षित थे। इनकी सुरक्षा के लिए युवाओं (सैनिकों) को अधिवासों में तैनात किया जाता था। राजनैतिक नेताओं के लिए भी, जिन्हें अनुकूल स्थल की आवश्यकता होती है, अधिवास आधार होता था, जहाँ से वे अपनी जाति की भूमि के अधिकार को सुरक्षित रख सकें। चूँकि वहाँ धार्मिक और सैन्य अधिकारियों का निवास होने के कारण इन अधिवासों की समुचित रक्षा की आवश्यकता होती थी, अत: उनके सामने यह प्रश्न रहा होगा कि अधिवासों को किस प्रकार अच्छी तरह सुरक्षित रखा जा सकता है। इसका उत्तर था कि इन अधिवासों के चारों ओर इतना अधिक मजबूत परकोटा बनाया जाये, जो आक्रमण को सह सके। इस प्रकार अधिवास सैन्य शक्ति के केन्द्र बन गये।

आर्थिक कारक (Economic Factor) :

धार्मिक, सैन्य और राजनैतिक अग्रणी व्यक्तियों और आश्रितों के भोजन की आपूर्त्ति, लोगों द्वारा शिकार अथवा वनों से संग्रहण करके की जाती थी। अधिवास में निवास करनेवाले व्यक्तियों के लिए अतिरिक्त भोज्य सामग्री जनजाति के लोग ही एकत्र करते रहे होंगे। अन्तत: किसी के मस्तिष्क में यह विचार आया होगा कि क्यों न सूखा और बाढ़ जैसे कठिन समय के लिए थोड़ा अतिरिक्त संग्रहण कर लिया जाये। लोग एकत्र की गई वस्तुओं को अधिवासों में इकट्‌ठा करने लगे। इस प्रकार भोज्य सामग्री की अतिरिक्त आपूर्त्ति के भण्डारण का कार्य भी अधिवासों ने प्राप्त कर लिया। विभिन्न व्यक्ति जो एक साथ रह कर सामाजिक-आर्थिक क्रियायें सम्पन्न कर सकें, उनके लिए अधिवास एक तटस्थ स्थल बन गया।

ग्रामीण अधिवासों का जो स्तर आज हमें देखने को मिलता है वह उसे अनेक चरणों से गुजरने के बाद प्राप्त हुआ है। उद्‌विकास सिद्धांत के समर्थक विद्वानों के अनुसार ग्रामीण अधिवासों का उद्‌विकास निम्नलिखित तीन चरणों से गुजर कर हुआ है जो इस प्रकार है:-

(i) शिकार करने तथा भोजन संग्रह करने की अवस्था (Hunting and Food Gathering Stage)

(ii) चारागाह स्तर (Postoral Stage)

(iii) कृषि स्तर (Agricultural Stage)

1.2.1 शिकार करने तथा भोजन संग्रह करने का स्तर

इस स्तर में मानव अपने पेट भरने के लिए भोजन का उत्पादन न कर विभिन्न माध्यमों से भोजन संग्रह करने का कार्य करता था। जंगली क्षेत्र मानव के प्रमुख शरणस्थल थे जहाँ मानव फलों, कन्दों, जड़ों, पत्तियों आदि का संग्रह अपने भरण-पोषण के उद्देश्य से करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमते रहता था। साथ ही जंगली जीवों का शिकार करने तथा मछलियाँ पकड़ने का काम अपने पेट को भरने के उद्देश्य से करता था। ऋतु परिवर्त्तन के साथ भोजन संग्रह करने के तरीके व स्थान भी बदलते रहते थे। विद्वानों का मानना है कि इस स्तर में मानव स्थायी रूप से निवास करता था। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण अधि वासों की स्थापना का कार्य इसी स्तर में प्रारम्भ हुआ। एक ग्रामीण अधिवास में एक ही परिवार अथवा रक्त से जुड़े लगभग 40 से 80 व्यक्ति निवास करते थे। इस प्रकार के ग्रामीण अधिवास सामान्यतया जंगली क्षेत्रों के आन्तरिक भागों में मिलते थे जिसके कारण दूसरे मानवीय समाज की संस्कृति के प्रभाव से ये ग्रामीण अधि वास वंचित रहते थे।

वर्त्तमान समय में भारत के कुछ जनजातीय क्षेत्रों में ग्रामीण अधिवासों का यह स्तर देखने को मिलता है। झारखण्ड राज्य की बिरहोर व खाड़िया, मध्यप्रदेश में बस्तर क्षेत्र की पर्वतीय भाड़िया व गोंड; कर्नाटक राज्य की चेचू तथा आसाम राज्य की कूकी व कोन्यक जनजातियों के ग्रामीण अधिवास इसी स्तर के हैं।

1.2.2 चारागाह या पशुचारण की अवस्था

मानव जब जगह-जगह घूमने से परेशान होने लगा तथा उसने यह अनुभव किया कि जंगली पशुओं को मारने के बजाय उन्हें पालने में अधिक लाभ है तो मानव ने कुछ पशुओं को पालकर चारागाह अथवा घास क्षेत्रों में पशुओं के चारे की प्राप्ति रहने तक मानव निवास करने लगा। चारे की समाप्ति पर मानव को उपयुक्त स्थलों पर पशुओं के साथ जाना पड़ता था। यही वह समय था जब कुछ ऐसे स्थानों पर पूर्णतया स्थायी ग्रामीण अधिवासों की सफल स्थापना हुई जहाँ वर्ष पर्यन्त पशुओं के लिए चारा तथा जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध था।

आजीविका के साधनों में सुधार होने से मानवीय जनसंख्या में भी वृद्धि होने लगी जिससे कुछ ग्रामीण अधिवासों को स्पष्ट स्वरूप प्राप्त होने लगा, लेकिन इस स्तर में आजीविका के साधनों की पूर्णतया प्राकृतिक पर्यावरण पर निर्भरता रहने के कारण मानवीय अधिवासों को पूर्ण स्थायित्व प्राप्त नहीं हो सका।

1.2.3 कृषि विकास की अवस्था

मानव ने जैसे ही पशुपालन अवस्था से निकलकर कृषि अर्थव्यवस्था में प्रवेश किया वैसे ही ग्रामीण अधिवासों को उनका स्पष्ट स्वरूप व स्थायित्व मिलना प्रारम्भ हो गया। कृषि अर्थव्यवस्था विकसित होने से मानव को पहले से अधिक भोजन नियमित होने से मानव को पहले से अधिक भोजन नियमित रूप से प्राप्त होने लगा। यही नहीं, कृषि कार्यों ने मानव को स्थायी रूप से भूमि से जोड़ दिया, जिस पर वह कृषि कार्य करता

था। मानव द्वारा भूमि से स्थायी एवं लाभप्रद सम्बन्ध स्थापित हो जाने से ग्रामीण अधिवासों को स्थायित्व मिलने लगा तथा जनसंख्या में वृद्धि होने से ग्रामीण अधिवासों का विस्तार भी हुआ।

1.3 नगरीय अधिवास का उद्‌भव (Evolution of Urban Settlements)

नगर रचना मानव के सांस्कृतिक विकास से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण घटना है जो उसके पौरूष, सहकार, चातुर्थ, तकनीकी विकास, बौद्धिकता और विशिष्ट जीवन-शैली को चरितार्थ करती है। नगर-निर्माण की प्रथम घटना मानव की सभ्यता और संस्कृति की नींव मानी जाती है। वही मानव सभ्यता और सांस्कृतिक विकास का अगुआ बन सका जो ग्रामीण अधिवासों के निर्माण से ऊपर उठकर नगर बसाने में सफल हुआ। ऐसी अनुकूल परिस्थितियाँ विश्व के कृषि प्रधान नदी घाटी के क्षेत्रों में सबसे पहले उदित हुईं, जहाँ ग्रामीण अधिवासों से भिन्न कुछ विशेष गैर कृषि कार्यों के सम्पादन के लिए कुछ बड़े अधिवास अस्तित्व में आये जिन्हें कालान्तर में नगर नाम दिया गया। भारत नगर रचना का अगुआ देश रहा है जहाँ 6000 वर्ष पूर्व व्यवस्थित नगर बसाये गये थे। यह क्रम सतत चलता रहा, लेकिन आधुनिक सन्दर्भ में नगरों की उत्पत्ति और विकास में पश्चिमी देश आगे आ गये हैं।

नगरों के उद्‌भव से तात्पर्य नगरों की उत्पत्ति के कालिक पक्ष से है। जब कोई अधिवास नगर बन जाता है तो वह उसकी उत्पत्ति का समय होता है। नगर की उत्पत्ति दो प्रकार से होती है। कुछ अधिवास छोटी बस्ती के रूप में बसाये जाते हैं, लेकिन अनुकूल परिस्थिति में अपने क्रियाकलाप बढ़ाकर नगर का रूप धारण कर लेते हैं। जिस समय वे नगर कहलाने लगते हैं वह अवस्था उनके उद्‌भव की प्रतीक है।

कई विद्वानों ने नगरीय अधिवासों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। एम०ए० मूरी (M.A. Murry) का मानना है कि नगरीय अधिवासों (Urban Settlements) की उत्पत्ति धातु युग में हुई। मुरी (Murry) के अनुसार धातु युग में धातु निर्मित अस्त्र-शस्त्र पत्थरों से निर्मित शस्त्रों से कहीं अधिक प्रभावी होते थे। इसी कारण धातु शस्त्रों वाले मानवीय समूह पत्थरों से निर्मित शस्त्रों वाले मानवीय समूहों पर शासन करते थे। धातु शस्त्रों वाले मानवीय समूह ने अपने धातु शस्त्रों के बल पर ग्रामीण क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। यह विजयी मानव समूह अपनी सुरक्षा तथा अन्य भागों पर विजय प्राप्ति की लालसा रखने के कारण अपने साथ पर्याप्त संख्या में सैन्य बल रखते थे तथा किसी सुरक्षित स्थल पर प्रायः किलो में निवास करते थे। यही सुरक्षित स्थल बाद में सैन्य शिविरों में परिवर्तित हो गये जो बाद में विकसित होकर नगर के रूप में आ गये।

लुईस ममफोर्ड (Lewis Mumford) के अनुसार नगरी अधिवासों की उत्पत्ति ग्रामीण अधिवासों से हुई है। ग्रामीण अधिवासों के क्रमिक विकास से बड़े गाँव तथा कालान्तर में बड़े ग्रामों से नगरीय अधिवासों का विकास हुआ। ममफोर्ड (Mumford) का मानना है कि ग्राम और नगर की संस्कृति के मिश्रण से नगर का स्वरूप विकसित हुआ। ममफोर्ड (Mumford) ने अपनी पुस्तक "The City and History" में लिखा है-नगर का अधिकांश भाग अदृश्य था। वस्तुतः ग्राम में दृश्य रूप में उपस्थित था, लेकिन वह विकासशील गर्भ की भाँति न होकर एक प्रजनक्य अण्डे की भाँति था। क्योंकि उसे भावी भिन्नतापूर्ण और जटिल सांस्कृतिक विकास की प्रक्रिया के लिए परिपूरक पुरूष संरक्षक के गुणसूत्रों की परिपूर्णता की आवश्यकता थी।" क्वीन तथा थामस (Queen & Thomas) ने नगरीय अधिवासों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में लिखा है- 'निस्संदेह ही नगर पहले नव पाषाणकालिक ग्राम के रूप में विकसित हुए जो एक या दूसरे प्रकार से दीवारदार नगरों की विकसित हुए, जिनमें से कुछ विशाल साम्राज्यों की राजधानी बने।

नगरों के विकास से तात्पर्य उनके स्वरूप और कार्य में वृद्धि से है। सीमित कार्यो के चलते उनका आकार और विस्तार मन्द गति से वृद्धिमान रहता है जबकि अधिक कार्य सम्पादन से जनसंख्या बढ़ती है जो उनकी आकृति को विकसित करती है। नगरीय जनसंख्या की बढ़ती आवश्यकता के साथ परिक्षेत्र की जनसंख्या की माँग बढ़ने से नगर की वृद्धि होती है, फलतः एक छोटा नगर महानगर में बदल जाता है जो उसके कालिक और स्थानिक पक्ष को रेखांकित करता है। कुछ विपरित परिस्थितियाँ भी उत्पन्न हो जाती है। जिससे विकास रूक जाता है या नगर का अस्तित्व मिट जाता है। नदी किनारे पर जन्मा नगर बाढ़ या अपरदन से नष्ट हो जाता है। प्राकृतिक प्रकोप के अतिरिक्त मानवीय कारणों से भी ऐसी घटनाओं हो जाती हैं। प्राचीन नगरों के भग्नावशेष इसके प्रमाण हैं।

नगरों के विकास का स्थानिक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। जो नगर बसाये जाते हैं उनका धरातलीय विन्यास (Layout) पूर्व नियोजित होता है, जबकि जो अधिवास विकसित होकर नगर बनते हें उनका धरातलीय विन्यास विकास अवस्थाओं के अनुसार बहुआयामी होता है। चण्डीगढ़ के धरातलीय विन्यास और दिल्ली के धरातलीय विन्यास में इसीलिए अन्तर है। जो नगर प्राकृतिक या कृत्रिम घेरे में जन्म लेते हैं जैसे-तंग घाटी, सर्पिल मोड़, जलीय या स्थलीय अवरोध तथा कृत्रिम खाई या चहारदीवारी, उनका स्थलीय विन्यास विशिष्ट रूप ग्रहण कर लेता है जबकि बाधा रहित समतल धरातल पर जन्में नगर का फैलाव सहज होता है जैसे-पटना और वाराणसी। प्राचीन कालीन नगरों के विस्तार प्रारूप की तुलना में आधुनिक कालीन नगरों का धरातलीय फैलाव भिन्न पाया जाता है, क्योंकि तकनीकी उन्नति से स्थलीय अवरोधों को कम कर दिया जाता है जिससे नगर का फैलाव सुगम हो जाता है।

1.4 नगरों की उत्पत्ति एवं उद्‌विकास को प्रभावित करनेवाले कारक (Factors Affecting Origin and Evolution of Towns)

नगर की उत्पत्ति और विकास के सम्बन्ध में उसके स्थल (Site) और स्थिति (Situation) का विशेष महत्व होता है। कोई नगर जितने स्थान को घेरता है अर्थात् जितने भूभाग पर बसा होता है, उसे नगर का स्थल कहते है। वास्तविक नगर के बाहर उसके चारों ओर पायी जानेवाली भौतिक तथा मानवीय दशाओं को नगर की स्थिति कहा जाता है।

किसी भी नगर की उत्पत्ति एवं विकास में कई कारकों का योगदान रहता है। ये कारक स्वतंत्र रूप से अथवा सम्मिलित रूप में किसी विशेष स्थल पर नगरीय अधिवास की स्थापना में सहयोग प्रदान करते हैं। मुख्य रूप से जिन स्थानों पर मानवीय अधिवास का जन्म होता है। बाद में ऐसा मानवीय अधिवास विकसित होकर नगरीय अधिवास का स्वरूप प्राप्त कर लेता है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से नगरों की उत्पत्ति तथा विकास को प्रभावित करनेवाले समस्त कारकों को निम्नलिखित पाँच (5) वर्गो में रखा जा सकता है:-

(1) प्राकृतिक कारक (Natural Factors)

(2) आर्थिक कारक (Economic Factors)

(3) राजनैतिक कारक (Political Factors)

(4) धार्मिक कारक (Religious Factors) / सामाजिक-सांस्कृतिक कारक (Socio-Cultural Factors)

(5) अन्य कारक (Other Factors)

(1) प्राकृतिक कारक (Natural Factors) : प्राकृतिक कारक किसी भी नगर के भविष्य का स्वरूप निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाते हैं, इसी कारक नगरों की उत्पत्ति तथा विकास को प्रभावित करने वाले कारकों में प्राकृतिक कारकों का प्रारम्भिक महत्व होता है। नगरों की उत्पत्ति तथा विकास को निर्धारित करनेवाले प्राकृतिक कारकों में निम्न तीन कारक उल्लेखनीय हैं:-

(i) स्थलाकृति या उच्चावचन,

(ii) जलवायु तथा

(iii) जल-आपूत्ति।

उक्त तीनों प्राकृतिक कारकों की अनुकूलता मानवीय क्रियाओं के लिए आधारभूत महत्व रखती हैं, इसीलिए नगरों की उत्पत्ति तथा विकास में उक्त प्राकृतिक कारक उल्लेखनीय महत्व रखते हैं। समतल एवं उपजाऊ मैदानी भाग, मृदुल जलवायु दशायें, पर्याप्त रूप में भूमिगत जल की उपलब्धता तथा सततवाहिनी नदियों की समीपता नगरों के विकास के लिए अनुकूल कारक होते हैं।

सामान्यत: विश्व के अधिसंख्य महानगरों का बसाव सततवाहिनी नदियों अथवा झीलों के किनारे पर मिलता है, क्योंकि नदियों अथवा झीलों से नगरों की विशाल जनसंख्या को जल-आपूर्त्ति में सहायता तो मिलती है, साथ ही नदियों व झीलों से सस्ते जल परिवहन की सुविधा भी आसानी से प्राप्त हो जाती है। संयुक्त राज्य अमेरिका में मिशीगन झील पर शिकागो महानगर, दूरी झील पर डेट्रॉइट महानगर तथा हड़सन नदी पर बसा न्यूयार्क महानगर, ब्रिटेन में टेम्स नदी पर लन्दन महानगर, फ्राँस में सीन नदी पर बसा पेरिस महानगर, चीन में ह्वांगहो नदी पर बसा बीजिंग महानगर तथा रूस में बोल्गा नदी पर बसा मास्को महानगर इस तरह के प्रमुख उदाहरण हैं।

भारत में यमुना नदी पर दिल्ली, मथुरा और आगरा, गंगा नदी पर हरिद्वार, कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, पटना; हुगली नदी पर कोलकता, गोमती नदी पर लखनऊ आदि नगर बसे हुए हैं। इसी प्रकार पाकिस्तान के अधि संख्य नगर सिन्ध तथा उसकी सहायक नदियों पर ही बसे हुए हैं। यही नहीं विश्व के अधिकांश महानगर नौका योग्य नहरों अथवा नदियों के माध्यम से सागरों एवं महासागरों से सम्बन्धित हैं या सागरीय तटों पर बन्दरगाह नगरों के रूप में विकसित हो गये हैं। जैसे:- मुम्बई, कोलम्बो, सिंगापुर, पनामा, जिब्राल्टर, अदन आदि बन्दरगाह नगर (Port Town) हैं, जो मुख्य व्यापारिक केन्द्र बन गये हैं।

पर्वतीय तथा पठारी भागों की तुलना में समतल मैदानी भागों में नगरों का विकास तीव्रगति से होता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि एक तो मैदानी भागों में नगरों के विस्तार के लिए पर्याप्त स्थान आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं तो दूसरे परिवहन मार्गो का आसानी से विकास हो जाने से मैदानी नगर अन्य नगरों से भी अच्छी प्रकार से जुड़े होते हैं।

शीत प्रधान तथा उष्णता प्रधान प्रदेशों की कठोर जलवायु में मानवीय अधिवासों का अधिक विकास नहीं हो पाता है। यही कारण है कि विश्व का अधिकांश नगर उपोष्ण कटिबन्धीय तथा समशीतोष्ण कटिबन्धीय जलवायु प्रदेशों में मिलते हैं।

(2) आर्थिक कारक (Economic Factors) : विश्व के जिन प्रदेशों व क्षेत्रों में मानवीय आर्थिक क्रियाकालपो का जितना अधिक सकेन्द्रण मिलता है, उन क्षेत्रों में नगरों के उद्भव एवं विकास की संभावनायें उतनी ही अधिक होती है। विश्व के अधिकांश नगरों का विकास खनन क्रियाओं, परिवहन क्रियाओं, औद्योगिक क्रियाओं तथा व्यापारिक क्रियाओं से जुड़ा हुआ मिलता है। पश्चिमी यूरोप के अधिकांश क्षेत्रों में 19वीं एवं 20वीं शताब्दी में जो तीव्र नगरीकरण की प्रक्रिया हुई, उसका प्रमुख कारण यहाँ खनन, औद्योगिक, व्यापारिक एवं परिवहन क्रियाओं के सकेन्द्रण का मिलता था। इसी प्रकार रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और भारत के जिन क्षेत्रों में उक्त आर्थिक क्रियाओं का अधिक जमाव मिलता है उनमें नगरीय बस्तियों का अस्तित्व भी अधिकता से मिलता है। जिसमें जमशेदपुर, विशाखापत्तनम, भिलाई, राउलकेला, गाजियाबाद, नोएडा, बोकारो और कानपुर नगरों के विकास में अद्योगों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इसी प्रकार मुगलसराय, टूण्डला तथा नागपुर नगरों के विकास में रेल परिवहन मार्गो की भूमिका उल्लेखनीय रही है। शिकागो, मोन्ट्रिल, वेनिस तथा कालीकट परिवहन सुविधाओं के कारण ही नगरों के रूप में विकसित हुए हैं। दूसरी ओर खनन क्रियाओं के कारण विकसित हुए नगरों में केलीफोर्निया, डिगबोई, लॉरेन, जोहन्सबर्ग तथा किम्बरले के नाम उल्लेखनीय हैं।

(3) राजनैतिक कारक (Political Factors) : विश्व के कई क्षेत्रों में नगरों की स्थापना एवं विकास में राजनैतिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। भारत के अधिकांश प्राचीन नगरों की उत्पति राजनैतिक कारणों से मानी जाती है। प्राचीन काल में भारतीय राजाओं ने अपनी-अपनी रियासतों की सुरक्षा के लिए सुरक्षात्मक दृष्टि से प्राय: नदियों के किनारे तथा पहाड़ियों पर नगरों की स्थापना की या उन स्थानों पर अपने-अपने किलों का निर्माण किया। अनुकूल परिस्थितियाँ मिलने पर राजाओं के ये किले नगर के रूप में विकसित हो गये। उत्तर प्रदेश में अमेठी व बलरामपुर, राजस्थान में अलवर, चित्तौड़गढ़, जोधपुर, अजमेर, भरतपुर तथा जयपुर आदि नगर इस प्रकार के प्रमुख नगर हैं।

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक विश्व के विभिन्न देशों और प्रदेशों में अनेक नगरों की उत्पति एवं विकास राजधानी नगर के रूप में हुआ है। भारत में मुस्लिम राजाओं द्वारा फैजाबाद, लखनऊ, फर्रूखाबाद, जौनपुर आगरा और शाहजहाँपुर इसी प्रकार के उत्तर प्रदेश के प्रमुख नगर हैं। प्रशासनिक प्रदेश में ऐसे केन्द्रों की आवश्यकता होती है जहाँ से पूरे प्रदेश (देश, प्रांत आदि) का प्रशासनिक संचालन सफलापूर्वक किया जा सके। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के राजधानी नगर, प्रान्तीय मुख्यालय, जिला मुख्यालय, तहसील मुख्यालय तथा विकास खण्ड मुख्यालय तथा विकास खण्ड मुख्यालयों में विभिन्न प्रशासनिक कार्यालयों की स्थापना की जाती रही जिससे इन मुख्यालयों की नगरीय विकास की प्रक्रिया को अपेक्षाकृत अधिक बल मिला है।

(4) सामाजिक-सांस्कृतिक कारक/धार्मिक कारक (Socio-Cultured Factors/Religious Factors) : नगरों के विकास पर विविध सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पाया जाता है। विभिन्न मानव समाजों की मान्यताओं, परम्पराओं, रीति-रिवाजों, धार्मिक विश्वासों, शिक्षा आदि का प्रभाव विभिन्न प्रदेशों के नगरीय विकास पर देखा जा सकता है। भारत में हरिद्वार, ऋषिकेश, बनारस, इलाहाबाद, अयोध्या, वृन्दावन, गया, अजमेर नगरों की उत्पति और विकास में धार्मिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सऊदी अरब में मक्का एवं मदीना नगर, इटली का रोम और इजराइल में जेरूसलम इसी प्रकार के धार्मिक नगर हैं। शिक्षा नगरी के रूप में ऑक्सफोर्ड विश्व विद्यालय का क्षेत्र आदि।